Malthusian Theory of Population

M.A- Sem- II CC-6

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत

Class by - Dr. Manish Kumar

थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने अपनी प्रसिद्ध किताब जनसंख्या के सिद्धांत पर 1798 में एक निबंध लिखा था जो गुमनाम रूप से प्रकाशित किया गया था। बाद में उन्होंने अपने असली नाम से इस किताब का विस्तार किया।

माल्थस के अनुसार "जनसंख्या में जीवन निर्वाह साधनों की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।" (Population tends to outrun subsistence) इस प्रकार, यह सिद्धांत स्पष्ट करता है, कि खाद्य पूर्ति की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तेजी से वृद्धि होती है और यदि इस जनसंख्या वृद्धि पर रोक न लगाई गयी तो परिणामस्वरूप दुराचार या विपत्ति (vice or misery) उत्पन्न हो जाती है।

माल्थस के सिद्धांत की मान्यतायें —
(Assumptions of the Malthusian Theory)

(i) मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन अनिवार्य है तथा कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।

(ii) प्रजनन शक्ति तथा सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा यथा स्थिर रहती है।

(iii) आर्थिक समृद्धि और सन्तानोत्पत्ति में सीधा और घनिष्ट सम्बन्ध पाया जाता है।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का मुख्य कथन →

माल्थस के अनुसार जनसंख्या, ज्यामितीय (गुणोत्तर) अनुपात में बढ़ती है जबकि जीवन निर्वाह क्षमता में वृद्धि अंकगणितीय (समान्तर) अनुपात से होती है।

* जनसंख्या वृद्धि दर → जनसंख्या ज्यामितीय या गुणोत्तर अनुपात (1 : 2 : 4 : 8 : 16 : 32 : 64 : 128 etc) में बढ़ती है। जनसंख्या 25 वर्षों में दो गुनी तथा 200 वर्ष में 256 गुना की वृद्धि सम्भावित है।

खाद्य पूर्ति दर → माल्थस के अनुसार खाद्य सामग्री की पूर्ति जनसंख्या की अपेक्षा नीची दर से बढ़ती है। जनसंख्या वृद्धि दर अंकगणितीय श्रेणी (1:2:3:4:5:6 से बढ़ती है) तथा कृषि में उत्पाद ह्रासमान नियम लागू होता है। जिससे कृषि उत्पादन में एक सीमा के पश्चात ह्रास की प्रवृत्ति पायी जाती है)

जनसंख्या और खाद्य पदार्थों में असंतुलन →

माल्थस ने निष्कर्ष निकाला था कि 200 वर्षों में खाद्य पदार्थों की आपूर्ति और जनसंख्या के मध्य 1:256 का अनुपात होगा।

इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा निरूपित कर सकते हैं।

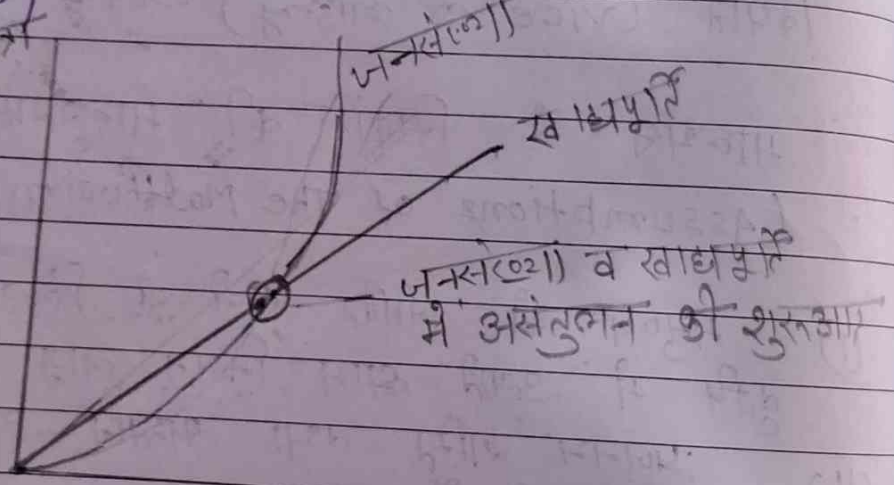

माल्थस के अनुसार जनसंख्या नियंत्रण का उपाय

1) प्राकृतिक नियंत्रण —

खाद्यान्न की अपेक्षा जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के फलस्वरूप असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस अति जनसंख्या या जनाधिक्य की स्थिति को पुनः संतुलन में लाने के लिए प्रकृति स्वयं क्रियाशील हो जाती है और जिसे प्राकृतिक अवरोध सुखमरी, अकाल, युद्ध, बीमारी, बाढ़, भूकम्प, अनावृष्टि तथा अन्य प्राकृतिक संकटों के रूप में क्रियाशील हो जाते हैं जो जनसंख्या को घटाते हैं

(ii) प्रतिबंधक नियंत्रक (Preventive checks) → माल्थस ने सुझाव दिया कि प्राकृतिक प्रकोपों से उत्पन्न कष्टों से बचने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य जनसंख्या वृद्धि पर निरोधक प्रतिबंध लगायें। प्रतिबन्धक नियंत्रक से उनका तात्पर्य आत्मसंयम, ब्रह्मचर्य का पालन, विवाह न करना या देर से विवाह करना आदि था। किन्तु वे आत्म संयम को ही प्रमुख और प्रभावशाली मानते थे।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएं

(i) माल्थस की आधारभूत मान्यता अवास्तविक है कि कामवासना और सन्तोत्पत्ति को समान मान लिया गया है। काम वासना एक जैविक आवश्यकता है किन्तु सन्तोत्पत्ति या प्रजननता प्रायः सामाजिक - आर्थिक तथा ~~व्यक्तिक~~ व्यक्तिक के परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

(ii) कृषि में ह्रासमान नियम के लागू होने की कल्पना की थी लेकिन कृषि में नवीन प्रौद्योगिकी के द्वारा इसे स्थगित किया जा सकता है।

(iii) काल्पनिक वृद्धि दर कि खाद्य सामग्री अंकगणितीय एवं जनसंख्या ज्यामितिय वृद्धि दर से बढ़ती है, लेकिन ~~क्योंकि~~ समान अवधि में एक देश से दूसरे देश में यह वृद्धि दर भिन्न-भिन्न पाई जाती है।

(iv) माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न जनशक्ति के पक्ष की उपेक्षा की। जनसंख्या वृद्धि सदैव हानिकारक नहीं होती है।

(v) तकनीकी विकास की उपेक्षा किया गया है।

(vi) माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण हेतु आत्मसंयम, नैतिकता तथा संयमित जीवन बताया है जो अव्यवहारिक है।

माल्थस के सिद्धांत का महत्व एवं व्यहारिकता

माल्थस के सिद्धांत में सत्य का जो अंश है, हम उसकी अवहेलना नहीं कर सकते है।

उनके जनसंख्या सिद्धांत को सभी विकसित एवं सभ्य देशों का किसी न किसी रूप में समर्थन प्राप्त है। लगभग 200 वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी उनके सिद्धांत पर परिचर्चा बनी है। आज जो विकसित देशों में जनसंख्या की समस्या का सामना नहीं करना पड़ रहा है तो उसका प्रमुख कारण है माल्थस का चेतावनी। वास्तव में माल्थस ने अति जनसंख्या के दुष्परिणामों से चेतावनी देकर यूरोप के देशों को इस तरफ सोचने को बाध्य कर दिया और उसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने जनसंख्या नियन्त्रण के तरीके अपनाने शुरू कर दिये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत आलोचनाओं के बावजूद भी अडिग और दृढ़ बना हुआ है। मार्शल, कीसा आदि अर्थशास्त्रियों ने माल्थस के सिद्धांत का समर्थन किया है।